REET 2025
LEVEL-1 & 2
वंदन बैच
हिंदी
भाषा शिक्षण की विधियाँ
Part 04
LIVE
30-12-2024 11:00 AM
ROJGAR WITH ANKIT

ध्वन्यात्मक विधि

- भाषा विज्ञान में सबसे पहले एवं सर्वाधिक ध्यान तथा बल ध्वनि विज्ञान पर ही दिया जाता है।
- इसमें अर्थ की अपेक्षा ध्वनि पर ही अधिक बल डाला जाता है।
- इस पद्धति के अनुसार राष्ट्रभाषा या किसी भी नवीन भाषा का सुनना तथा उसका अनुकरण करके बोलना सबसे अधिक आवश्यक है। किसी भी भाषा की ध्वनियों पर अधिकार प्राप्त कर लेने से उसका बोलना तथा लिखना सरल हो जाता है।

- इस विधि में शब्दों, वाक्य खण्डों और वाक्यों के अर्थ पर उतना ध्यान नहीं दिया जाता जितना उनकी ध्वनियों पर।
- इस विधि का एक सबसे बड़ा गुण यह है कि ध्वनियों का खूब अभ्यास हो जाता है और उनका उच्चारण स्थिर हो जाता है। इससे लिखने में भी सहायता मिलती है, क्योंकि अक्षर विन्यास का भी अभ्यास हो जाता है।
- उच्चारण सम्बन्धी कठिनाइयों को दूर करने के लिए आजकल लिंग्वाफोन, भाषा - प्रयोगशाला, इयरफोन, टेपरिकॉर्डर आदि यन्त्रों की सहायता बड़ी उपयोगी सिद्ध हुई है। इनके द्वारा विद्यार्थी अपेक्षित ध्वनियों को बार-बार

सुनकर कानों को अभ्यस्त कर लेता है और अनुकरण द्वारा शुद्ध उच्चारण करने लगता है। स्वरों और व्यंजनों का चार्ट बनाकर, उच्चारण स्थान और प्रयत्न का सही रूप प्रदर्शित करके उच्चारण सम्बन्धी कठिनाई बहुत कुछ दूर की जा सकती है।

गुण-

- इस विधि में एक साथ उच्चारित होने वाले शब्द एक साथ सिखाये जाते हैं जैसे नर्म, गर्म, मर्म, शक्ति, भक्ति, मुक्ति आदि।

- इस विधि में यह ध्यान रखा जाता है कि बालक शीघ्र ही शुद्ध लिखने- पढ़ने में सफल हो जाए।
- हिन्दी वर्णमाला के अक्षरों का क्रम उच्चारण स्थान के अनुसार सज्जित। यह विधि उनका पूरा-पूरा लाभ उठाती है। इसमें अंग्रेजी वर्णों का उच्चारण दोष दूर हो जाता है। अत: आरम्भ में ही bat, cat, rat, mat आदि सिखाए जाते हैं।

REET 2025 L-1&2 हिंदी भाषा शिक्षण की विधियाँ

अक्षर-बोध विधि-

यह सबसे प्राचीन शिक्षण विधि है। इसमें सर्वप्रथम स्वर और व्यंजन वर्णों को पढ़ाया जाता है। इस विधि में अक्षर की ध्वनियों को प्रधानता दी जाती है। स्वर - शिक्षा में बालक को शुद्ध उच्चारण का अभ्यास कराया जाता है। इसके बाद बालक स्वर और व्यंजन का मिलान सीखता है। बच्चों को अक्षरों का मिलान सिखाया जाता है। इसके बाद शब्दों को मिलाकर वाक्य बनाया जाता है। अक्षर बोध विधि से बालकों का उच्चारण शुद्ध होता है, अक्षर, शब्द तथा वाक्य का क्रम ज्ञात होता है।

समवाय विधि-

- यह विधि भाषा संसर्ग विधि का ही दूसरा रूप है। इसमें व्याकरण की शिक्षा लम्बीय समवाय के द्वारा दी जाती है; अर्थात् इसमें रचना, कहानी, पद्य आदि की शिक्षा देने के साथ-साथ ही प्रसंग और अवसरानुकूल व्याकरण की शिक्षा दी जाती है। उदाहरण के लिए- रचना पढ़ाते समय यदि कई वाक्यों में संज्ञा शब्द आये हों तो विद्यार्थियों को संज्ञा का ज्ञान कराया जा सकता है। इसी प्रकार पद्य पढ़ाते समय छन्द, अलंकारों आदि की शिक्षा दी जा सकती है।

भाषा संसर्ग विधि- भाषा संसर्ग प्रणाली का अर्थ है कि भाषा की कोई रचना में से व्याकरण के नियम व उदाहरण से समझाना।

- इसमें व्याकरण के नियम रटवाने की आवश्यकता नहीं होती, न ही नियमों को अलग समय देकर समझाने की आवश्यकता होती है।
- पाठ्यपुस्तक, रचना, संवाद, प्रश्नोत्तर द्वारा ही अभ्यास के द्वारा व्याकरण सम्मत भाषा सिखाने पर बल देती है।
- इस विधि में व्याकरण की शिक्षा दिए बिना ही भाषा का शुद्ध रूप सिखा दिया जाता है।

पर्यवेक्षित विधि या निरीक्षित स्वाध्याय विधि (Supervised Method):

- इस विधि में विद्यार्थियों को कक्षा में ही निर्दिष्ट कार्य दिया जाता है। शिक्षक बालकों के पथ-प्रदर्शन और निर्देशन के लिए मौजूद रहता है। छात्रों को स्वयं ही कार्य पूरा करना पड़ता है। वह किसी से सहायता नहीं लेता और अपनी समस्या स्वयं सुलझाता है। इस विधि द्वारा बालक उचित अध्ययन की विधि समझ लेता है और कार्य पूरा करने में उस विधि का ठीक प्रयोग करने लगता है।

- भाषा शिक्षण में इस विधि के अनुसरण में कुछ अधिक समय लगता है पर विद्यार्थियों में स्वयं अध्ययन करने की आदत पड़ती है। नियमित कक्षा शिक्षण की सहायक विधि के रूप में इसका प्रयोग अधिक उपयोगी है।

खेल विधि (Play method):

- खेल एक ऐसी क्रिया है जिसके माध्यम से बालक सक्रिय एवं आनन्दपूर्ण स्थिति में रहते हुए शिक्षा प्राप्त करते हैं। खेल द्वारा शिक्षा की एक निश्चित रूपरेखा प्रस्तुत करने का श्रेय काल्डवेल कुक महोदय को है जिनका कहना था कि केवल श्रवण और पठन मात्र से शिक्षा पूरी नहीं होती, बल्कि इसके लिए रुचिपूर्वक स्वाध्याय

सुनना

पढ़ना

एवं स्वानुभूति की आवश्यकता होती है। अतः भाषा शिक्षण संबंधी कार्यों को खेलों का रूप प्रदान करना चाहिए। अभिनय, प्रहसन, कविता पाठ, अन्त्याक्षरी, कवि दरबार, शब्द रचना के खेल, वाक्य रचना के खेल, समस्यापूर्ति आदि खेल के ही रूप में अपनाए जा सकते हैं। कुक महोदय ने अपनी पुस्तक 'प्ले वे' में तथा डब्ल्यू.एम. रायबर्न ने 'प्ले वे सजेसन्स' में भाषा शिक्षण संबंधी निम्न प्रकार के खेलों के सुझाव दिए हैं;

- **अक्षरों, शब्दों, वाक्यांशों एवं वाक्यों की पहचान** - विभिन्न चिटों पर लिखे हुए वर्ण, शब्द, वाक्यांश एवं वाक्यों को पहचान कर उन चिटों को फलक पर

रिक्त स्थानों पर सही-सही लगाना। चिट दिखाकर ढेर में से उनकी प्रतिलिपि ढूँढ़ना। फलक पर प्रश्न लिखे रहते हैं तथा प्रश्नों के उत्तर चिटों पर लिखे रहते हैं। प्रश्न पढ़कर उसकी उत्तर वाली चिट ढूँढ़कर प्रश्न के नीचे दिए हुए रिक्त स्थान पर लगाना आदि।

- बालकों को दो समूहों में बाँट दिया जाए। प्रत्येक समूह के छात्रों के पास शब्दों या वाक्यों की चिटें देकर उन्हें एक-दूसरे से बदलवा कर पढ़ाने की प्रतियोगिता कराई जाए।

- छात्र दौड़ते हुए रास्ते में लिखे गए वाक्यों को रुककर पढ़ते हैं और आगे बढ़ते जाते हैं, जो सभी वाक्य पढ़कर लक्ष्य स्थान पर पहुँच जाता है, यह विजयी घोषित होता है।

- एक डिब्बे में शब्द - चिटें भर दी जाती हैं। बालक वृत्ताकार बैठ जाते हैं। शिक्षक बाजा बजाता रहता है और डिब्बे को छात्र एक-दूसरे के सामने बढ़ाते जाते हैं। जैसे ही बाजा बन्द होता है, डिब्बे का घूमना बन्द हो जाता है और जिस छात्र के पास वह रहता है वह उसे खोलता है और एक चिट निकालकर पढ़ता है। फिर वही क्रम चल पड़ता है।

निगमन विधि:- निगमन पद्धति का कक्षा शिक्षण में महत्त्वपूर्ण स्थान है इस पद्धति में पहले नियम दिए जाते है और फिर एक उदाहरण दिया जाता है। यह विधि विज्ञान और गणित पढ़ाने के लिए बहुत उपयोगी है। उदा. संज्ञा की परिभाषा की व्याख्या, संज्ञा के उदाहरण देना और संज्ञा को दोहराना

निगमन पद्धति के शिक्षण के दौरान प्रस्तुत विषयवस्तु की मुख्य विशेषताएं इस प्रकार है –

- सूक्ष्म से स्थूल तक
- सामान्य से विशिष्ट तक

- अज्ञात से ज्ञात तक
- अमूर्त से मूर्त तक
- नियम से उदाहरण तक

देखा

आगमनात्मक विधि: आगमनात्मक विधि वह विधि कहलाती है जिसमें विशेष तथ्यों और घटनाओं के अवलोकन और विश्लेषण द्वारा सामान्य नियम या सिद्धांत बनाए जाते हैं।

आगमनात्मक विधि की मुख्य विशेषताएं निम्नलिखित हैं:

- उदाहरण से नियम तक
- स्थूल से सूक्ष्म तक
- विशिष्ट से सामान्य तक
- ज्ञात से अज्ञात तक
- मूर्त से अमूर्त तक

आगमनात्मक पद्धति को अक्सर शिक्षण की एक थकाऊ विधि माना जाता है क्योंकि इसमें सीखने की प्रक्रिया बहुत लंबी होती है। यह विधि अरस्तु ने दी है।